आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-08-14

पवित्रता के सागर, ऐवर-प्योर, पतित-पावन, विश्व में पवित्र दुनिया के रचयिता, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारा अनादि नाता है भाई-भाई का, फिर तुम साकार में भाई-बहन हो इसलिए तुम्हारी कभी क्रिमिनल दृष्टि नहीं जा सकती.

परमात्मा शिव द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र-यज्ञ का मुख्य कारण, इस विश्व की सर्व जीवात्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों को संपूर्ण पवित्र बनाकर इस विश्व पर, कल्प पहले माफिक फिर से संपूर्ण पवित्र दुनिया सतयुग की स्थापना करना हैं. इस लिए हमारे यह ब्राह्मण जीवन में पवित्रता धारण करना सबसे मुख्य हैं. हम सब आत्माये एक परमपिता-परमात्मा कि संतान है इसलिए आपस में भाई-भाई है, जब कि साकार में हम प्रजापिता ब्रह्मा कि संतान तो फिर आपस में भाई-बहन है.

हमारा अभी का पुरुषार्थ ऐसा हो जो हमारी आंख किसी में भी न डूबें, किसी के प्रति आकर्षित न हो. ऐसे ही हमें देख हमारे तरफ भी कोई बुरी दृष्टि से आकर्षित न हो.

संपूर्ण पवित्रता पर पूरा क्लास भेज रहे है, जिसे हमें संपूर्ण पवित्रता धारण करने में मदद हो.

किसे संपूर्ण पवित्र आत्मा कहा जाता हैं?

संपूर्ण पवित्रता यानी जीवन में जब से ब्राह्मण बने तब से बाल-ब्रह्मचारी की धारणा को संपूर्ण पालन किया हो. संपूर्ण पवित्र आत्मा यानी

- जिसकी वृति संपूर्ण पावन हो. वृति में रिंचक मात्र भी काम-विकार न हो.
- पावन वृति से अपनी दृष्टि और कृति को शुद्ध किया हो.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न हो.
- सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति भाई-भाई की वृति-दृष्टि हो.
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट हो.
- अपने मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देती हो.

संपूर्ण पवित्रता धारण करने की विधि -

- स्वयं को आत्मा समझ परमपिता-परमात्मा शिवबाबा से ज्वालामुखी योग कर, अपवित्रता के संस्कारों को आत्मा में से जला कर भस्म करना हैं.

- ज्ञान को युज कर अपनी वृति को पावन करना हैं. सर्व आत्माओं के तरफ हमारी वृति अंदर से भाई-भाई की रखने की प्रैक्टिस करनी हैं.

- आत्मा मेंसे भय को निकाल, स्व से और परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहना ही हैं.

- व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए, फालतू बातों को न सुनना हैं, न बोलना हैं और न देखना हैं.

- नींद में स्वप्न से मुक्त रहने के लिए, बाबा से दस मिनिट योग कर, बाबा की गोदी में सो जाना हैं.

- मन-वचन-कर्म से किसी का दुख लेना नहीं हैं और किसको भी दुख नहीं देना हैं.

संपूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए हमारी वृति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृति स्वच्छ हैं तो मेरी आँखें किसी पर ठहरेगी नहीं, आँखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से संबन्ध-सम्पर्क में आनेवाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई रहती हैं.

- बाबा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा क़ाबू हैं?

- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहनेवाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो चेक करें हम कितना ऑनेस्ट रहते हैं?

- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व संपूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी हम पानी पीते या खाना खाते, बाबा की याद में रह पवित्रता की दृष्टि देकर खाते हैं?

- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बादमें सोते हैं?

- चेक करो, हम किसी भी अन्य आत्मा को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं देती हूँ?

बाबा ने बताया हैं की पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं. देवी-देवताये सब सुखी हैं इसका कारण वे संपूर्ण पवित्र हैं. याद रहे की पवित्रता मेरी पूंजी हैं, जैसे हमारे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को हम संभाल कर रखते हैं, वैसे ही मुझे अपनी पवित्रता की संभाल करनी हैं.

प्रतिज्ञा -- कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति. Please provide your feedback to Atmabhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com.